आचार परक क्रान्ति / व्यावहारिक क्रान्ति

1960 के दशक में यह अनुभव किया जाने लगा कि मानव भूगोल के क्षेत्र में किया जा रहा अ० गणितीय विधियों द्वारा अध्ययन जीवन के वास्तविकता पर आधारित नहीं है। सामाजिक प्रासंगिता प्रायः नगण्य थी। इस नए दौर के भौगोलिक चिन्तन को व्यावहारिक भूगोल का नाम दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भूगोल के विधि तंत्र में कई महत्वपूर्ण ही परिवर्तन हुए। इनमें आचार परक क्रान्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। यह क्रान्ति मात्रात्मक क्रान्ति के विरोध में आया। क्रिर्क और ओल्सन जैसे भूगोलवेत्ताओं के अनुसार अधिकतर सामाजिक पहलुओं के भौगोलिक विश्लेषण में आचार परक विधि आधार तंत्र के रूप में कार्य करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व वातावरणीय और आर्थिक पहलुओं को ही इस प्रकार के अध्ययन का आधार माना जाता था। लेकिन वर्तमान समय में यह माना गया है कि अनेक आर्थिक-सामाजिक कार्यों का आधार मनुष्य के आचार विचार और उसके चिन्तन की प्रवृत्तियाँ है। सामाजिक भूगोल में यह एक नवीन प्रवृत्ति थी जिसमें सामाजिक भूगोल के विश्लेषण में गुणात्मक परिवर्तन ला दिया, इसे ही आचार परक क्रान्ति कहा गया है।

आचार परक क्रान्ति के शुरुआत का श्रेय क्रिर्क महोदय (ब्रिटिश) को जाता है। उन्होंने 1951 में आचार परक वातावरण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

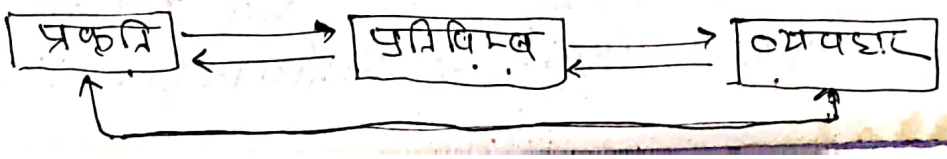

क्रिक महोदय ने 1951 में "व्यवहारिक वातावरण" शब्द का प्रयोग किया था। ओल्सन महोदय के अनुसार 'व्यवहारिक उपागम ही सामाजिक भूगोल की कुंजी है।'

किर्क के अलावा Lowenthal, बोल्डिंग जैसे विद्वानों ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रेड

आचार परक वातावरण का निर्धारण सूचनाओं पर निर्भर करता है। प्रेड महोदय के अनुसार मनुष्य के आचार विचार एवं अत्यात्मक होकर वह स्वयं जैसे नवीन सूचनाओं के आधार पर अपने विचारों को बदलता है। सूचना की गुणवत्ता और मात्रा मनुष्य के व्यवहार को बदलता है प्रभावित करता है। इस संदर्भ में ~~प्रेड~~ प्रेड महोदय ने एक मॉडल प्रस्तुत किया :—

(सोनेनफेल्ड) (1972)

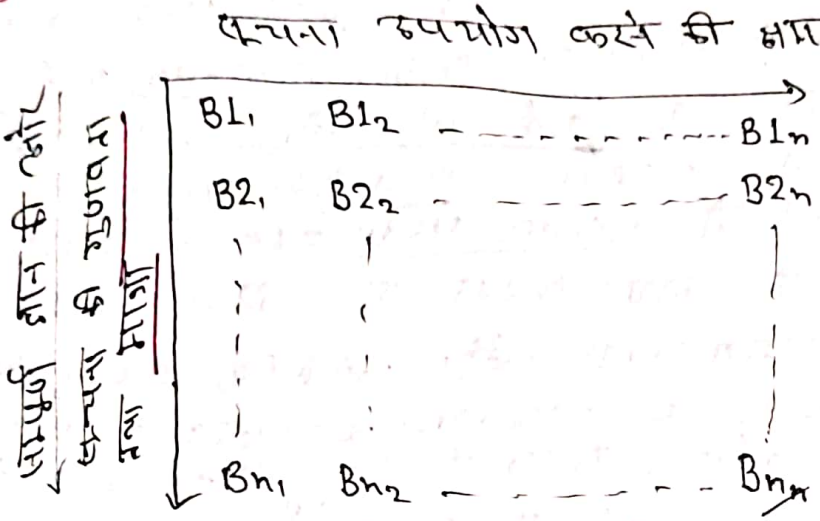

Sonnenfeld ने एक दूसरा मॉडल प्रस्तुत किया जिसे जालीनुमा वातावरणीय मॉडल कहा जाता है। इसके अनुसार भौगोलिक वातावरण एक दृश्य और अदृश्य वातावरण है। इसके मध्य में ही मनुष्य के आचार विचार का स्थान होता है। अर्थात् आचार विचार को भौगोलिक वातावरण में केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। मनुष्य स्वयं भौगोलिक वातावरण का दोहन करता है और इस क्रम में वह एक कार्यिक वातावरण का निर्माण करता है। ज्यों-

ज्यों ज्यों मनुष्य के अनुभव में वृद्धि होती जाती है उसके वातावरण में फैलाव हो रहा है। पश्चिमी देशों में विकासशील देशों की तुलनात्मक, ज्यादा वातावरण का अधिक विस्तार है नीचे के मॉडल में इस वातावरण के पारस्परिक स्थिति को दिखाया गया है।

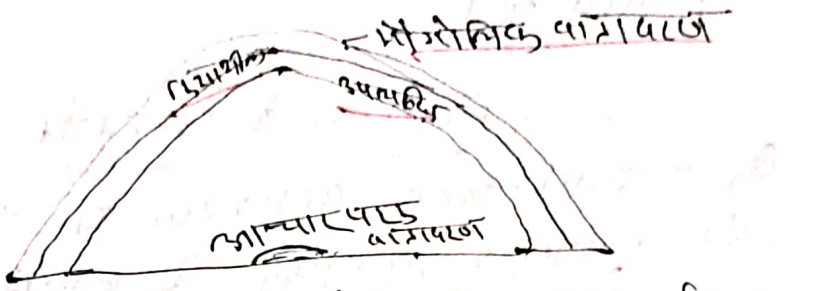

सोनेन फिल्स का गुम्बदनुमा वातावरणीय मॉडल

स्पष्ट है कि 60 के दशक और उसके बाद भूगोल का विभिन्न क्षेत्र आचार परक क्रान्ति से प्रभावित हुआ। मानव भूगोल इसमें सबसे महत्वपूर्ण है था मानव भूगोल के दो क्षेत्र इससे सर्वाधिक प्रभावित हुए।

① प्रवास प्रारूप तथा मानव स्थानांतरण
② नियोजन में स्थानीयकरण का निर्णय

USA, कनाडा, और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में यूरोपीय जनसंख्या का स्थानांतरण आचार परक प्रवृत्ति का ही परिणाम है। पश्चिमी यूरोप का उपनिवेश विश्व का लगभग ~~अधिक~~ अधिकतर देशों में था। लेकिन मानव स्थानांतरण का कार्य उन्हीं देशों में हुआ जिसके विषय में यह सूचना मिली की यूरोपीय जनसंख्या के अधिवास के लिए अनुकूल है। इसी प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभिक ~~दिनों~~ दिनों में एशियाई

गतिविधि का स्थानांतरण मुख्यतः U.S.A. तथा कनाडा की ओर होता था लेकिन मध्य पूर्व की ओर होने लगा। खाड़ी युद्ध के बाद, मध्य-पूर्व की ओर जाने वाले लोगों में कमी आयी। बिहार के श्रमिकों का पंजाब और हरियाणा की ओर स्थानान्तरण आचार परक प्रवृत्तियों का ही परिणाम है।

नियोजन के अन्तर्गत भी मनुष्य के आचार परक वातावरण की अहम भूमिका है। आर्थिक क्रियाओं के स्थानियकरण पर मनुष्य के आचार विचार पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। स्मिथ महोदय ने औद्योगिक स्थानीयकरण के लिए आचार परक सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जिन्हें "अधिकतम लाभ सिद्धान्त" कहा जाता है जिसके अनुसार उद्योगों का स्थापना न्यूनतम लागत पर नहीं बल्कि उपभोक्ताओं की प्रवृत्ति (व्यवहार) पर निर्भर करती है। अगर उपभोक्ता अधिक मूल्य देने की स्थिति में हो तो लागत अधिक होने के बावजूद भी वहाँ उद्योगों की स्थापना की जा सकती है।

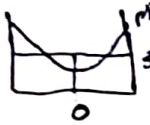

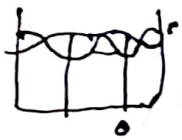

लगभग इसी प्रकार का विचार फेटर और हाटलिंग ने अपने आचार परक सिद्धान्त में दिया था। हैगरस्ट्रैंड जैसे विद्वान ने यह माना है कि तकनीकों के विसरण पर कृषि क्षमता में वृद्धि होती है।

Fetter "बाजार प्रतिस्पर्धा सिद्धान्त"

इस प्रकार ऊपर के विश्लेषणों से स्पष्ट है कि आचार परक कारक आधुनिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण अंग है जो किन

इसकी भी कई सीमाएं हैं। इसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि आचार परक वातावरण का निर्माण कल्पनाओं पर निर्भर करता और कल्पनाएं कई प्रकार की होती हैं। गलत कल्पना से भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इससे किसी भी समाज में गलत आचार परक वातावरण का निर्माण हो सकता है। अतः स्मिथ महोदय ने यह भी कहा है कि आदर्श कल्पना की कोई निश्चित माप नहीं है अतः गलत कल्पना की संभावना है। गलत कल्पना प्रतिक्रियात्मक व्यवहार का भी निर्माण कर सकता है। हार्वे महोदय ने लिखा है कि यह एक मनोविज्ञान का विषय है और इसमें भूगोलवेत्ताओं को दखल नहीं देना चाहिए।

इन आलोचनाओं के बावजूद आचार परक विधि की अपनी सीमाएं हैं। और इस विधि ने मानव व भूगोल विशेषकर सामाजिक भूगोल के विश्लेषण को एक नई दिशा दी।